E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(2): 212-214
Received: 26-03-2022
Accepted: 23-05-2022

विकास कुमार
रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. सी.एन. झा
सहायक प्रोफेसर, डॉ. जाकिर हुसैन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
विकास कुमार
रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं इसके व्यवहारिक अनुप्रयोग का अध्ययन

विकास कुमार, डॉ. सी.एन. झा

सारांश
शिक्षक शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकों के प्रासंगिकता को कभी भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। स्कूली शिक्षा पद्धति की बदलती हुई तस्वीर में डिजिटल क्रांति का बहुत बड़ा प्रभाव है। शिक्षण संस्थानों में डिजिटल टेक्नॉलाजी का समावेशन एवं इस व्यवहारिक अनुप्रयोग शिक्षको की तकनीकी जानकारी के साथ अध्यापन की इस प्रक्रिया पर जोर देता है। इसके लिए समय-समय पर कार्यक्रमों के माध्यम से शैक्षिक प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक सिद्धांतों, विधियों एवं उपकरणों के उपयोग के बारे में शिक्षको को प्रशिक्षत करना अत्यंत आवश्क है।, सिखने-सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले शिक्षको की भूमिका सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों व चारित्र के विकास में काफी सराहणीय रही है। विज्ञान जीवन के हर पक्ष के साथ-साथ शिक्षा को भी कम लागत में अधिक उत्पादोन्नमुखी बनाने का प्रयास का रहा है। वर्तमान में शिक्षा देने का माध्यम डिजिटल सिस्टम है इसमें प्रमुख होने वाले उपकरण– मोबाईल, रेडियो, दूरदर्शन टेपरेकार्ड आदी है। यह आलेख कंप्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं इसके कारिक अनुप्रयोग का अध्ययन एवं शिक्षकों की भूमिका विशलेषण करता है।

कुटशब्द : शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, शिक्षकों में कम्प्यूटर शिक्षा, व्यवहारिक अनुप्रयोग

प्रस्तावना
अध्यापक सम्पूर्ण शिक्षा में अपना महत्वपूर्ण केन्द्रीभूत पदस्थापना रखता है। वह राष्ट्र विकास योगदान प्रदान करने वाली शिक्षा की तैयारी करता है, और उसको क्रियान्वित करने में निरन्तर प्रयत्नशील राहा है। वह समाज को तेल के दीपक की भांति रोशनी प्रदान करता है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक सिद्धान्तों, विधियों एवं उपकरणों को उपयोग होता है। यह एक विस्तृत विषय है इसके अन्तर्गत विभिन्न उपकरणों जो कि इलैक्ट्रानिकी पर आधारित होते हैं, का उपयोग किया जाता है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी में वैज्ञानक सिद्धान्तों व उपकरणों का उपयोग शिक्षा देने में किया जाता है। ये उपकरण हैं - रेडियो, दूरदर्शन, विडियो, टेपरिकार्ड आदि। वर्तमान में शिक्षा देने में जो सबसे महत्वपूर्ण इलेक्ट्रानिक उपकरण है वह है डिजिटल सिस्टम। शिक्षा एवं शैक्षिक प्रौद्योगिकी जहाँ आपस में साध्य व साधन का सम्बन्ध रखते हैं वहीं इलेष्ट्रानिक उपकरण भी शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक है। विज्ञान, जीवन के हर पक्ष के साथ साथ शिक्षा को भी कम लागत में अधिक उत्पादोन्नमुखी बनाने का प्रयास कर रहा है। सभी कार्यों के होने में विज्ञान का योगदान हो रहा है सभी कार्यों में कम्प्यूटर का उपयोग किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अब कम्प्यूटर युक्त डिजिटल कक्षा का प्रयोग किया जाने लगा है।

वर्तमान में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान हो गया है क्योंकि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उस देश के नागरिकों को दी जाने वाली शिक्षा का आलम्बन लेती है वह परजीवी पादपों की भाँति शिक्षा रूपी वृक्ष का सहारा लेकर पनपती और पोषित होती हैं। अध्यापक उस वृक्ष को सींचने वाला माली हैं। अतः यह अन्तिम सत्य है कि अध्यापक सम्पूर्ण शिक्षा में अपना महत्त्वपूर्ण एवं केन्द्रीभूत पदस्थापन रखता है। वह राष्ट्र विकास में योगदान प्रदान करने वाली शिक्षा की तैयारी करता है और उसको क्रियान्वित करने में निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। वह समाज को तेल के दीपक की भांति रोशनी प्रदान करता है। शिक्षक प्राचीन वर्तमान एवं भविष्य में राष्ट्र का निर्माता रहा है, और रहेगा, वह पथ प्रकाशक, निर्माणक संस्कृति वाहक एवं समाज सुधारक है।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसारः- ''शिक्षक राष्ट्र के भाग्य के मार्गदर्शक हैं। शिक्षक बौद्धिक परम्पराओं तथा तकनीकी कौशलों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरण करने में धुरी का कार्य करता है। वह सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षक तथा परिमार्जन करता, वह बालकों का ही मार्गदर्शक नहीं वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शक है।''

शिक्षण संस्थानों में कम्प्यूटर तकनीकों के व्यवहारिक अनुप्रयोग

कम्प्यूटर तकनीकों का अनुप्रयोग एवं डिजिटल कक्षा का सामान्य अर्थ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के जाल का शिक्षण एवं अधिगम में साभिप्राय प्रयोग से लिया जाता है। डिजिटल कक्षाके लिये अन्य पदों यथा ऑनलाइन लर्निंग, वर्चुअल लर्निंग, वेब बेस्ड लर्निंग आदि का प्रयोग किया जाता है। मूलभूत रूप से ये सभी शैक्षिक प्रक्रिया के लिये प्रस्तुत किये जाते है। इन शैक्षिक प्रक्रियाओं में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का प्रयोग शिक्षण एवं अधिगमन की क्रियाओं में एक समय में या अलग-अलग किया जाता है।

डिजिटल कक्षा शब्द ऑनलाइन लर्निंग, वरचुअल लर्निंग, डिस्ट्रीब्यूटैड लर्निंग नेटवर्क तथा वेबबेस्ट लर्निंग से भी व्यापक है। डिजिटल कक्षा में ''ई'' शब्द से आशय इलैक्ट्रोनिक से होता है। लर्निंग शब्द का अर्थ होता है, सीखना। इस प्रकार डिजिटल कक्षा का सामान्य अर्थ इलैक्ट्रोनिक की सहायता से सीखना या शिक्षा में नवीन इलैक्ट्रोनिक तकनीकों का प्रयोग ही डिजिटल कक्षा कहलाता है। इस प्रकार डिजिटल कक्षा में व्यक्तियों एवं समूहों द्वारा की जानेवाली शैक्षिक गतिविधियों को शामिल किया जाता हैं। ये गतिविधियाँ online or ofline एक समय में अथवा एक साथ या अलग-अलग कम्प्यूटर एवं अन्य इलेक्ट्रोनिक माध्यमों के द्वारा संपादित की जाती हैं।

शिक्षकों के लिए डिजिटल कक्षा के प्रति अभिवृत्ति

साधारण अभिवृत्ति का आशय किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण से होता हैं अर्थात् मनोवैज्ञानिक दृष्टि से हम कह सकते हैं कि अभिवृत्ति से हमारा आशय उस दृष्टि से है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, संस्था, अथवा किसी स्थिति के प्रति किसी व्यक्ति विशेष के किसी विशेष व्यवहार का ज्ञान प्राप्त होता है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्ति किसी व्यक्ति की किसी विषय के प्रति उनकी आन्तरिक भावना या विश्वास होता है। व्यक्ति के विकास के साथ उसके अनुभवों की वृद्धि हुआ करती हैं। अभिवृत्ति एक विशिष्ट मानसिक दशा होती हैं। व्यक्ति इसी से कार्य करता है और इसी से नियन्त्रित भी रहता है। अभिवृत्ति द्वारा दी गई प्रेरणा बिलकुल व्यक्ति की इच्छाओं एवं मूल प्रवृत्तियों द्वारा प्रदत्त प्रेरणा के समान होती हैं। अभिवृत्ति व्यक्ति के अर्जित अनुभवों से संगठित होकर उसे गति प्रदान करती है। अभिवृत्ति का निर्माण प्रत्ययों द्वारा होता हैं। अभिवृत्ति के निर्माण में ज्ञानात्मक व भावात्मक आधार होते हैं। अभिवृत्ति का विकास धीरे-धीरे होता है। जब वह मनोवैज्ञानिक क्रिया डिजिटल कक्षा के प्रति शिक्षकों की हो तो इस प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति को हम डिजिटल कक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति कह सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षित शिक्षकों के कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति एवं इसके व्यवहारिक अनुप्रयोग के महत्वपूर्ण प्रभाव निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर एक महासंगणक के रूप में कार्य करता है क्योंकि यह बड़ी गणनाओं को कुछ ही सेकेंड में हल कर देता है।
2. यह सूचनाओं का संग्रह बड़ी मात्रा में करता है जिससे बड़ी मात्रा में शैक्षिक सूचनाओं का संग्रह आसानी से किया जा सकता है।
3. इसका प्रयोग शिक्षण व अनुदेशन में किया जाता है।
4. शैक्षिक संस्थाओं में प्रवेश परीक्षा, मूल्यांकन, परीक्षाफल आदि से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करने तथा निष्कर्ष तक पहुँचने में इसका प्रयोग किया जाता है।
5. विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण एवं कौशलों के विकास एवं अभ्यास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।
6. कम्प्यूटर की सहायता से शैक्षिक अनुसंधानों में आँकड़ों का संग्रह व गणना आसानी से की जा सकती है।

7. यह छात्रों को निर्देश व परामर्श देने में प्रयोग किया जाता है।
8. विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं की पारस्परिक तुलना करके गुणात्मक प्रगति का दिग्दर्शन कम्प्यूटर के माध्यम से सरलता से किया जा सकता है।
9. प्रयोगशाला व दूसरे क्रियात्मक कार्यों में कम्प्यूटर सहायक सामग्री के रूप में कार्य करता है।
10. विभिन्न प्रकार के विचारों व सूचनाओं की पुनरावृत्ति में इसका प्रयोग किया जाता है।
11. यह स्वशिक्षण में उपयोगी है।
12. शिक्षकों को उपस्थिति रजिस्टर को पूरा करना, समय सारणी का निर्माण करने तथा वेतन आदि का लेखा जोखा रखने में इसका प्रयोग किया जाता है।
13. कम्प्यूटर पर देश विदेश की विभिन्न पुस्तकों के सम्बन्ध में पूरी जानकारी होती है जिसका लाभ छात्र उठा सकते हैं।
14. छात्र कम्प्यूटर के प्रयोग से उन उपक्रमों को भी कर सकते हैं जो उनकी पाठ्यपुस्तक का भाग नहीं है अर्थात् जो छात्र जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं, उनकी जिज्ञासा को शांत करने के लिए कम्प्यूटर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

निष्कर्ष

इन उच्चमाध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा से दी जाने वाली शिक्षा के सन्दर्भ मे अध्यापिकाओं की डिजिटल कक्षा के प्रति कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों परम्परागत शिक्षण का प्रयोग, सॉफ्टवेयर का प्रयोग एवं नेटवर्क का प्रयोग के प्राप्तांकों का मध्यमान अध्यापकों के मध्यमान से कुछ अधिक है। जबकि डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान आयाम में अध्यापकों के प्राप्तांकों का मध्यमान अध्यापिकाओं से कुछ अधिक है।

ग्रामीण क्षेत्र के उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा के सन्दर्भ मे उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा के प्रति कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान,सॉफ्टवेयर का प्रयोग एवं नेटवर्क का प्रयोग के प्राप्तांकों का मध्यमान माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के मध्यमान से कुछ अधिक है। जबकि परम्परागत शिक्षण का प्रयोग आयाम में माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के प्राप्तांकों का मध्यमान उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों से कुछ अधिक है।

शहरी क्षेत्र के उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा से दी जानेवाली शिक्षा के सन्दर्भ मे उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों की डिजिटल कक्षा के प्रति कुल अभिवृत्ति एवं उसके आयामों परम्परागत शिक्षण का प्रयोग, सॉफ्टवेयर का प्रयोग एवं नेटवर्क का प्रयोग के प्राप्तांकों का मध्यमान माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के मध्यमान से कुछ अधिक है। जबकि डिजिटल कक्षा के प्रति रुझान आयाम में माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के प्राप्तांकों का मध्यमान उच्चमाध्यमिक स्तर के अध्यापकों से कुछ अधिक है।

संदर्भ

1. डॉ. एस. के. मंगल, शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली; c2013.
2. अस्थाना एवं अग्रवाल, मनोविज्ञान और शिक्षा, द्वितीय संस्करण, विनोद प्रकाशन, आगरा; c2004.
3. ए. बी.भटनागर, डा. मीनाक्षी भटनागर, एवं डॉ. अनुराग भटनागर, शैक्षिक एवं मानसिक मापन, पूर्णतः संशोधित संस्करण, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ; c2011.
4. गुप्ता, एस. पी., उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, तृतीय संस्करण, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद; c2007.
5. Radhika Taroor. Strategies for coping academic stress, Edu Tracks. August 2009;8:12.
6. D. Gowri Suvitha. Stress among secondary school teachers; c2012.